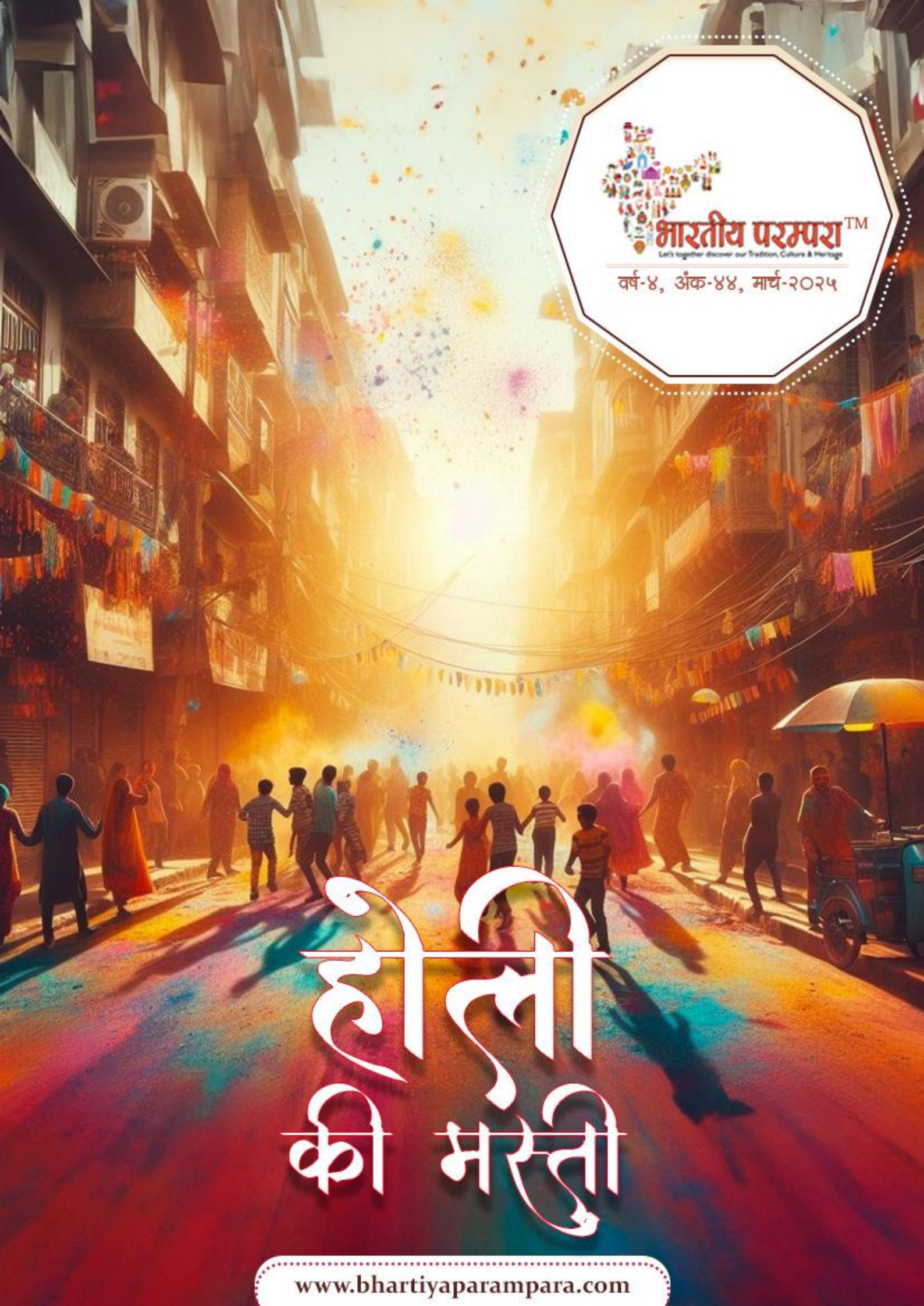

भारतीय परम्परा™
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage
वर्ष-४, अंक-४४, मार्च-२०२५

होली की मस्ती

www.bhartiyaparampara.com

भारतीय परम्परा™

Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

वर्ष-४, अंक-४४, मार्च-२०२५

संपादक
प्रीति माहेश्वरी

प्रकाशन स्थल
मुम्बई

डिजाइनिंग टीम
MX CREATIVITY

सोशल कनेक्शन

हमसे जुड़ने के लिए आइकन पर स्पर्श करें

www.bhartiyaparampara.com

paramparabhartiya@gmail.com

मूल्य

आपका कीमती समय

साका कैलेण्डर-१९४५, विक्रम संवत-२०८१, अयान-उत्तरायण, ऋतु-बसंत

सोम	31 चैत्र शु. द्वितीया/तृतीया, गणगौर पूजा	03 फाल्गुन शु. चतुर्थी, विनायक चतुर्थी	10 फाल्गुन शु. एकादशी, आमलकी एकादशी व्रत	17 चैत्र कृ. तृतीया	24 चैत्र कृ. दशमी
मंगल		04 फाल्गुन शु. पंचमी	11 फाल्गुन शु. द्वादशी	18 चैत्र कृ. चतुर्थी, भालचन्द्र संकष्टी चतुर्थी	25 चैत्र कृ. एकादशी, पापमोचिनी एकादशी व्रत
बुध		05 फाल्गुन शु. षष्ठी, स्कन्द षष्ठी	12 फाल्गुन शु. त्रयोदशी, प्रदोष व्रत	19 चैत्र कृ. पंचमी, रंग पंचमी	26 चैत्र कृ. द्वादशी
गुरू		06 फाल्गुन शु. सप्तमी	13 फाल्गुन शु. चतुर्दशी	20 चैत्र कृ. षष्ठी	27 चैत्र कृ. त्रयोदशी, प्रदोष व्रत मासिक शिवरात्रि
शुक्र		07 फाल्गुन शु. अष्टमी,मासिक दुर्गाष्टमी	14 फाल्गुन शु. पूर्णिमा, पूर्णिमा व्रत, चन्द्र ग्रहण, होलिका दहन	21 चैत्र कृ. सप्तमी, शीतला सप्तमी, बासोडा	28 चैत्र कृ. चतुर्दशी
शनि	01 फाल्गुन शु. द्वितीया	08 फाल्गुन शु. नवमी, अंतरा. महिला दिवस	15 चैत्र कृ. प्रतिपदा, होली	22 चैत्र कृ. अष्टमी,मासिक कृष्ण जन्माष्टमी, शीतला अष्टमी	29 चैत्र कृ. अमावस्या आंशिक सूर्य ग्रहण
रवि	02 फाल्गुन शु. तृतीया	09 फाल्गुन शु. दशमी, रोहिणी व्रत	16 चैत्र कृ. द्वितीया	23 चैत्र कृ. नवमी, शहीद दिवस	30 चैत्र शु. प्रतिपदा, नवरात्रि गुडी पाडवा, युगादी, चेटी-चंड

कृ. - कृष्ण शु. - शुक्ल

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस: नारी शक्ति का उत्सव

हर वर्ष 8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है, जो महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक योगदान को सम्मान देने का दिन है। यह दिवस न केवल महिलाओं के अधिकारों और समानता की बात करता है, बल्कि उनके संघर्षों और उपलब्धियों को भी दर्शाता है। दुनिया में महिलाओं ने हर क्षेत्र में अपनी पहचान बनाई है। आज वे शिक्षा, विज्ञान, खेल, राजनीति, व्यापार और कला जैसे विभिन्न क्षेत्रों में सफलता के झंडे गाड़ रही हैं। समाज में महिलाओं को समान अवसर देने और उनके अधिकारों की रक्षा करने के लिए अनेक कदम उठाए गए हैं, जैसे– **बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, सशक्त महिला-सशक्त समाज, महिला आरक्षण बिल आदि।**

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की शुरुआत 1908 में अमेरिका में हुई, जब महिलाओं ने काम के बेहतर अवसरों और समान अधिकारों की मांग की। इसके बाद 1911 में इसे औपचारिक रूप से मनाया गया और 1975 में संयुक्त राष्ट्र ने इसे आधिकारिक मान्यता दी। तब से लेकर आज तक, यह दिवस महिलाओं की उपलब्धियों और उनके अधिकारों की वकालत करता आ रहा है। महिलाएँ केवल परिवार की रीढ़ ही नहीं, बल्कि समाज के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। **एक शिक्षित महिला पूरे परिवार को शिक्षित कर सकती है, एक सशक्त महिला समाज को मजबूती दे सकती है। यदि नारी सुरक्षित और आत्मनिर्भर होगी, तो देश भी सशक्त बनेगा।**

नारी शक्ति को नमन –

आज के समय में महिलाओं को केवल घर तक सीमित नहीं रखा जा सकता। वे हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर रही हैं। फिर भी, कई जगहों पर महिलाओं के प्रति भेदभाव और अन्याय देखा जाता है। यह आवश्यक है कि हर व्यक्ति महिलाओं का सम्मान करे और उनके अधिकारों के प्रति जागरूक रहे। इस महिला दिवस पर हम प्रण लें कि हम हर महिला को समान अवसर और सम्मान देंगे। महिलाओं की शक्ति को पहचानें और उन्हें हर क्षेत्र में आगे बढ़ने का अवसर दें, क्योंकि– **"नारी का सम्मान ही समाज की पहचान है!"**

सतुयग से कलियुग यानि आज तक वसंत ऋतु में सभी सनातन धर्मावलम्बी बच्चे-बूढ़े, सब कुछ संकोच और रूढ़ियाँ भूलकर ढोलक-झाँझ-मंजीरों की धुन के साथ नृत्य-संगीत व रंगों में डूब जो त्योहार पूरे उमंग, जोश व उल्लास के साथ मनाते हैं उसी महत्वपूर्ण भारतीय त्योहार का नाम है **"होली"**।

वैसे तो सर्दियों के अंत और वसंत के आगमन का संकेत देने वाला यह भारतीय और नेपाली लोगों का त्यौहार माना जाता रहा है लेकिन इस त्यौहार की विशेषता के चलते यह आज विश्व के हर कोने में प्रसिद्धि पा चूका है यानि विश्व का प्रायः हर बाशिंदा इस त्यौहार से परिचित हो गया है। इस त्यौहार को **'होलिका', 'होलाका', 'फगुआ', 'फाल्गुनी', 'धुलेंडी', 'दोल', 'वसंतोत्सव', 'रंगपंचमी"** के नाम से भी जाना जाता है।

रंगों से खेलने वाला यह उत्सव फाल्गुन पूर्णिमा को होलिका दहन के पश्चात अगले दिन से यानि चैत्र मास की कृष्ण प्रतिपदा से लेकर पंचमी तक सभी लोग उत्साह में भरकर रंगों से खेलते हैं जिसके कारण इसे रंगपंचमी भी कहा जाने लगा। लेकिन आज इस आर्थिक युग में खासकर बड़े शहरों में यह पर्व पारंपरिक रूप से दो दिन ही मनाया जाता है।

बच्चे पानी की बंदूकों और पानी से भरे गुब्बारों का उपयोग एक-दूसरे पर छोड़ने और उन्हें रंगने के लिए करते हैं जबकि बड़े लोग एक दूसरे पर रंग, अबीर-गुलाल इत्यादि फेंकते हैं लेकिन आजकल केमिकल रंगों का उपयोग होने लगा है जिसके कारण होली में स्वास्थ्य लाभ होने की बजाय बीमारियां होने लगी हैं । इसलिये **गुलाल, अबीर, चंदन और टेसू (पलाश) के फूलों के रंगों से पारम्परिक, प्राकृतिक-वैदिक होली खेलने की परंपरा को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।** इससे होने वाले फायदे इस प्रकार हैं –

- प्राकृतिक रंगों के प्रयोग से त्वचा को कोई नुकसान नहीं होता है।
- प्राकृतिक रंगों के प्रयोग से आँख को भी नुकसान नहीं पहुँचता।
- आयुर्वेद के अनुसार टेसू (पलाश) के फूलों के रंगों से कफ, पित्त, कुष्ठ, दाह, मूत्रकृच्छ, वायु तथा रक्तदोष का नाश होता है। इस तरह कुल मिलाकर बतायें तो शरीर

प्रहलाद पर हो गयी और होलिका तो अग्नि में जलकर खाक हो गई और प्रह्लाद सकुशल धधकती अग्नि से बाहर आ गया। यह घटना फाल्गुन माह की पूर्णिमा तिथि को हुई थी इसलिए ही **विष्णु भक्त प्रह्लाद की याद में यानि बुराई पर अच्छाई की जीत दर्शाता होलिका दहन प्रारम्भ हुआ** और दूसरे दिन रंगो के साथ बड़े धूम धाम से पूरे भारत में रंगों का त्यौहार होली मनाया जाने लगा।

- पौराणिक कथाओ एवं शास्त्रों से ज्ञात होता है की होलाष्टक के दिन कामदेव ने देवताओ के अच्छे के लिए ही उन लोगों के कहे अनुसार प्रभु महादेव की तपस्या को भंग किया यानि प्रभु महादेव को तपस्या से उठा दिया था। इसके परिणामस्वरूप प्रभु शिव जी अत्यंत क्रोधित हो अपने तीसरे नेत्र की अग्नि से कामदेव को भस्म कर दिया। तत्पश्चात कामदेवजी की पतिव्रता पत्नी रति विलाप करने लगी और प्रभु महादेवजी से विनती की कि वे उन्हें क्षमा प्रदान कर पुनर्जीवित कर दें। जब सीधे और सरल स्वभाव के प्रभु भोलेनाथ का क्रोध शांत हुआ और उन्हें ज्ञात हुआ कि ये सब संसार के कल्याण के लिए देवताओं की बनाई योजना थी तब उन्होंने उस पतिव्रता रति को वचन दिया कि उनका पति द्वापर युग में प्रभु श्रीकृष्ण के पुत्र के रूप में जन्म लेगा। इसलिए रंगोत्सव और आनंद मनाया गया।

- द्वापर युग में प्रभु श्रीकृष्ण ने ब्रज भूमि पर फाल्गुन पूर्णिमा वाले दिन पूतना नामक राक्षसी का वध किया था जिसके खुशी में गाँव वालो ने दूसरे दिन वृन्दावन में होली का त्यौहार मनाया था। ब्रज की होली आज भी सारे देश के आकर्षण का बिंदु होती है।

- भारत के कुछ प्रदेशों में खासकर राजस्थान एवं सीमावर्ती मध्य प्रदेश में **गणगौर [गण (शिव) तथा गौर (पार्वती)] पर्व होलिका दहन के दूसरे दिन चैत्र कृष्ण प्रतिपदा से चैत्र शुक्ल तृतीया तक, 18 दिनों तक मनाया जाता है - यह आस्था, प्रेम और पारिवारिक सौहार्द का सबसे बड़ा उत्सव है।** गण (शिव) तथा गौर(पार्वती) के इस पर्व में कुंवारी लड़कियां मनपसंद वर पाने की कामना करती हैं यानि मनपसंद वर पाने की कामना लिये कुंवारी लड़कियां इस पर्व में पूजन के समय रेणुका की गौर बनाकर उस पर गुलाल, अबीर, चंदन और टेसू (पलाश) के फूलों के रंग के साथ साथ महावर, सिंदूर और चूड़ी अर्पण करती हैं । फिर चंदन, अक्षत, धूपबत्ती, दीप, नैवेद्य के साथ विधि-विधान से पूजन करके भोग लगाया जाता है। जबकि विवाहित महिलायें चैत्र शुक्ल तृतीया को गणगौर पूजन तथा व्रत कर अपने लिए अखंड सौभाग्य, अपने पीहर और ससुराल की समृद्धि की कामना करती हैं।

सनातन धर्मानुसार फाल्गुन माह की पूर्णिमा यानि होलिका दहन के बाद आने वाली चैत्र सुदी प्रतिपदा से नववर्ष का आगाज होता है इसलिए होली पर्व को नवसंवत और नववर्ष के आरंभ का प्रतीक माना जाता है।

- होली का दिन एक और कारण से भी महत्वपूर्ण है और वह कारण है **भगवान मनु का जन्मदिन जो होली वाले दिन ही हुआ था, इसलिए इसे 'मन्वादितिथि' भी कहा जाता है।**

उपरोक्त वर्णित सभी तथ्यों से निम्न तीन तथ्य स्पष्ट होते हैं -

1) धार्मिक मान्यता के अलावा भी होली का पौराणिक एवं ऐतिहासिक महत्व है ।
2) बुराई पर अच्छाई की जीत का यह पर्व समाज में उल्लास, भाई-चारे व प्रेम का संदेश फैलाता है।
3) होली का पर्व सामूहिक व व्यक्तिगत दोनों तरह से मनाए जाने वाला ऐसा विशिष्ट पर्व है जो धार्मिक, सांस्कृतिक व सामाजिक विशिष्टता रखता है। इसलिये ही उपभोक्ता खरीद और आर्थिक गतिविधियों के संदर्भ में भी होली का त्यौहार महत्वपूर्ण माना जाता है।

भारत में व्रज, मथुरा, वृन्दावन और बरसाने की लोकप्रिय लट्ठमार होली व श्रीनाथजी, काशी आदि की होली पूरी दुनिया में सबसे ज्यादा प्रसिद्ध है। इसलिये ही इस त्यौहार पर अनेक विदेशी भारत भ्रमण पर आते ही नहीं हैं बल्कि भागीदारी भी करते हैं। अतः यह स्पष्ट है कि उपरोक्त महत्वपूर्ण विशिष्टताओं के चलते ही होली एक राष्ट्रीय, सामाजिक और आध्यात्मिक पर्व है जो सभी समुदायों द्वारा पूरे हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाता है।

- गोवर्धन दास बिन्नाणी जी, 'राजा बाबू', बीकानेर (राजस्थान)

होली क्यों मनाते हैं, क्या कारण है!

होली का त्योहार बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है, जिसे रंगों के त्योहार के रूप में फाल्गुन महीने की पूर्णिमा को मनाया जाता है। वसंत की ऋतु में हर्षोल्लास के साथ मनाए जाने के कारण होली पर्व को **"वसंतोत्सव और काम-महोत्सव"** पर्व भी कहते है।

होली मनाने की परम्परा

वैदिक काल में इस पर्व को **"नवात्रैष्टि यज्ञ"** कहा जाता था। उस समय खेत के अधपके अन्न (गेहूं और चना) को यज्ञ में दान करके प्रसाद के रूप में लेने का विधान था। इस अधपक्के अन्न को **"होला"** कहते हैं, इसी से इसका नाम **होलिकोत्सव** पड़ा।

ब्यावर का बादशाह मेला

ब्यावर का ऐतिहासिक बादशाह मेला राजस्थान की रंग-बिरंगी संस्कृति की झलक प्रस्तुत करता है। बादशाह मेलें के दौरान बादशाह की सवारी में शामिल होकर लाल रंग की गुलाल की खर्ची को पाने के लिए यहां हजारों की संख्या में सभी धर्म, जाति एवं वर्ग के लोग जुटते हैं।

होली के रंग जीवन के संग

होलिका दहन-लकड़ियों को रखकर, गोबर के थेपले जैसे गोलाकार चक्रियो जैसी बड़बुले की माला और गोबर से ही नारियल बनाकर लड़किया होलिका की पूजा करके चढ़ाती है और उस नारियल को भाई द्वारा फोड़ा जाता है। उसके बाद संध्या मुहर्त में होलिका पुजन और दहन किया जाता है।

रसिया (भदावरी भाषा)

होली आई रे रंगीली, होली आई रे
होली आई रे, आई रे, होली आई रे।

रंग-अबीर उड़ावत छैला, पिचकारी मारे रसिया
होली आई रे, आई रे, होली आई रे।

लहंगा पहन, चुनरिया ओढ़ी, स्वांग धरे घूमे रसिया
होली आई रे, आई रे, होली आई रे।

देवरा कहत - "सुनो मेरी भौजी, बिन भौजी फीकी होरी!"
होली आई रे, आई रे, होली आई रे।

भौजी कहत - "सुनो मेरे देवरा, तुम संग ही खेलूं होरी!"
होली आई रे, आई रे, होली आई रे।

बाँह पकड़ रंग दीनी रसिया, तुम संग हम खेले होरी!
होली आई रे, आई रे, होली आई रे।

खेल रहे देवर-भौजी, होली आई रे!

- श्रीमती उषा चतुर्वेदी जी, भोपाल (म. प्र.)

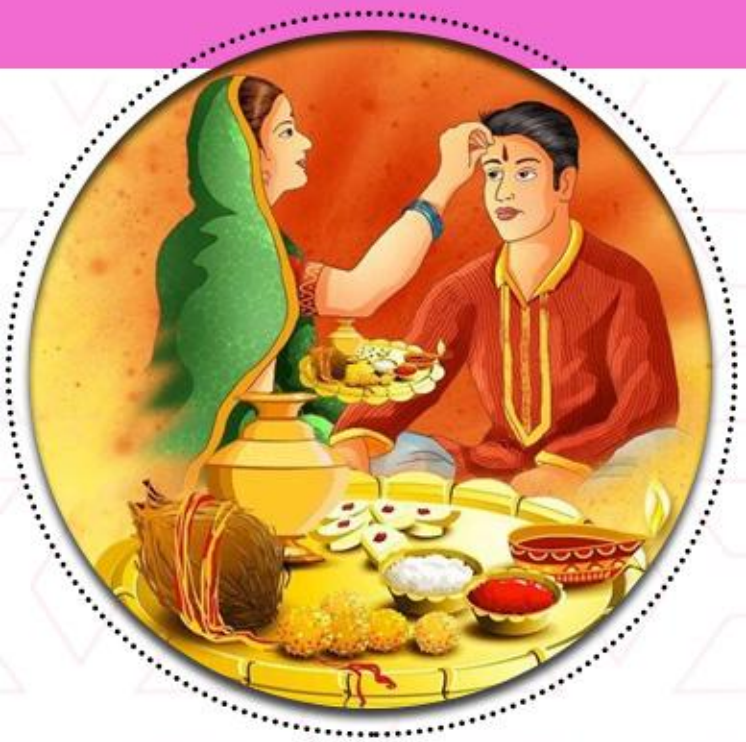

भारतीय संस्कृति एवं हिंदू धर्म के अनुसार भाई-बहन के प्रेम एवं निश्छल स्नेह को समर्पित तीन तिथियाँ होती हैं—**रक्षाबंधन, दीपावली की दूज (यम द्वितीया) एवं होली की भाई दूज।** इन तीनों तिथियों का मूल उद्देश्य भाई-बहन के प्रेम को स्थायित्व देना है। हम सभी इस बात से परिचित हैं कि हिंदू धर्म के दो प्रमुख त्योहारों के बाद दूज का पर्व आता है। इन दोनों दूज का अपना अलग-अलग महत्व है, लेकिन इनका मूल भाव एक ही **है— भाई-बहन का पवित्र संबंध।**

रक्षाबंधन के दिन बहन अपने भाई को राखी बांधने के लिए उसके घर जाती है, जबकि दूज के दिन भाई अपनी बहन के घर जाता है। इस दिन बहन अपने भाई के मस्तक पर टीका लगाकर उसकी दीर्घायु और सुरक्षा के लिए ईश्वर से प्रार्थना करती है। दीपावली की दूज के दिन बहन कुमकुम अथवा रोली से भाई के मस्तक पर टीका लगाती है, और भाई-बहन एक साथ यमुना अथवा किसी सरोवर में स्नान करते हैं।

होली की भाई दूज -

होली की भाई दूज के दिन बहन सर्वप्रथम सुबह स्नान करके दीवार पर आरवले रखती है। यह आरवले चावल को पीसकर उसमें हल्दी मिलाकर बनाए जाते हैं और फिर एपन से दीवार पर अंकित किए जाते हैं। आरवले की संख्या भाइयों की संख्या के अनुसार होती है— हर भाई के लिए दो आरवले बनाए जाते हैं, और दो अतिरिक्त बढ़ता के रूप में रखे जाते हैं। जो परिवार संयुक्त होता है, वहाँ सभी भाइयों के लिए आरवले बनाए जाते हैं।

सबसे पहले दीवार पर एक घर बनाया जाता है, जिसमें भाई और बहन दोनों की आकृतियाँ उकेरी जाती हैं। भाई-बहन को हाथ मिलाते हुए दर्शाया जाता है। घर को चारों ओर से बिल (सजावट के लिए विशेष आकृति) बनाकर सजाया जाता है। इसके नीचे आरवले रखे जाते हैं। बनाने के पश्चात इन पर दही और पुआ का भोग अर्पित किया जाता है। जब भाई घर आता है, तो उसे आरवले के पास बैठाकर भोजन कराया जाता है। भोजन करने के पश्चात बहन भाई के मस्तक पर गुलाल का टीका करती है। गुलाल होली का प्रतीक होता है, इसलिए

इसी से तिलक किया जाता है। इसके पश्चात भाई बहन को उपहार या रुपए प्रदान करता है, और बहन अपने भाई की सुरक्षा एवं लंबी आयु की प्रार्थना करती है।

समय के साथ बदलाव -

समय के साथ इस परंपरा में भी परिवर्तन आया है। अब अधिकांश बहनें आरवले नहीं बनातीं। समय का अभाव और दीवार की सुंदरता में कमी आने का भय इसके प्रमुख कारण हैं। पहले शादी के बाद भी बहन अपनी ससुराल में इसे अनिवार्य रूप से बनाती थी, लेकिन आज की पीढ़ी को आरवले के बारे में अधिक जानकारी नहीं है। फिर भी, जिन परिवारों में बुजुर्ग महिलाएँ हैं, वहाँ यह प्रथा आज भी जारी है।

एपन से बनाने का महत्व -

एपन से आकृतियाँ बनाने के पीछे एक गहरा आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक कारण है, जिसे हमेशा स्मरण रखा जाता है। पूजा संपन्न होने के बाद इससे संबंधित कथा भी सुनाई जाती है, जिससे नई पीढ़ी को इस परंपरा का महत्व समझाया जाता है।

होली की भाई दूज की कथा -

वैसे तो प्रचलन में इस पर्व से जुड़ी कई कथाएँ हैं, लेकिन प्रमुख कथा इस प्रकार है: एक गाँव में एक गरीब ब्राह्मण परिवार रहता था। ब्राह्मण देवता भिक्षा मांगकर अपनी गृहस्थी चलाते थे। उनकी एक बहुत ही सुंदर कन्या थी। धीरे-धीरे वह विवाह योग्य हुई, लेकिन वर ढूंढ़ने में उन्हें बहुत कठिनाई हो रही थी, क्योंकि उनके पास पर्याप्त दहेज की व्यवस्था नहीं थी। किसी तरह पास के एक गाँव में उन्होंने उसकी शादी तय कर दी।

लेकिन विवाह के बाद दहेज कम ले जाने के कारण ससुराल वाले उसे लगातार प्रताड़ित करने लगे। नाराज़गी दिखाने के लिए उन्होंने बहू का मायके आना-जाना भी बंद कर दिया। न तो लड़की अपने मायके जा सकती थी और न ही उसके घरवाले उससे मिलने आ सकते थे।

कुछ समय बाद होली के उपरांत भाई दूज का पर्व आया। ससुरालवालों ने सख्त निर्देश दे दिया कि "**तुम मायके नहीं जाओगी और न ही तुम्हारा भाई यहाँ आ सकता है।**"

भाई और बहन का आपस में बहुत प्रेम था। जैसे ही दूज का त्योहार आया, बहन सुबह से ही उदास हो गई, लेकिन ससुरालवालों पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

उधर उसका भाई भी जिद पर अड़ गया कि **"मैं तो बहन से टीका लगवाकर ही रहूँगा।"** माता-पिता ने समझाया, "वहाँ जाकर कोई झगड़ा मत करना। जैसे वह रह रही है, वैसे ही

रहने दो।" परंतु भाई ने दृढ़ निश्चय कर लिया और कहा, **"मैं टीका लगवा कर ही दिखाऊँगा।"**

इधर बहन सुबह से ही सिलबट्टे पर चावल और हल्दी पीस रही थी, क्योंकि ननद को आरवले रखने थे। भाई अपनी बहन के गाँव पहुँचा। गाँववालों को भी यह जानकर आश्चर्य हुआ। भाई ने सबके सामने कहा, "मैं टीका लगवाकर ही रहूँगा!"

उसने ईश्वर को स्मरण किया और प्रार्थना की—
"यदि मेरा और मेरी बहन का प्रेम सच्चा है, तो हे ईश्वर, मुझे कुछ समय के लिए कुत्ता बना दो।"
और वह सचमुच कुत्ता बन गया।

कुत्ते का रूप लेकर वह बहन के आँगन में चला गया। बहन वैसे ही दुखी मन से चावल पीस रही थी। तभी कुत्ते ने सिलबट्टे पर अपना मुँह मारा। गुस्से में आकर बहन ने हल्दी और चावल में सना अपना हाथ उसके मुँह पर जोर से मार दिया। इसके बाद कुत्ता भाग गया।

भाई ने फिर से ईश्वर से प्रार्थना की, और वह पुनः मनुष्य बन गया। जब गाँववालों ने उसे देखा, तो सब चौंक **गए—उसके मस्तक पर एपन (हल्दी-चावल का मिश्रण) का टीका लगा हुआ था, और चेहरे पर स्पष्ट रूप से बहन की हथेली की छाप थी!**

यह खबर बिजली की तरह पूरे गाँव में फैल गई। जब यह बात बहन के ससुरालवालों तक पहुँची, तो वे भी आश्चर्यचकित रह गए। उन्होंने अपनी गलती स्वीकार की और भाई को सम्मानपूर्वक घर बुलाया। बहन ने विधिपूर्वक अपने भाई को टीका लगाया। परिवारवालों ने भी अपनी भूल स्वीकार करते हुए क्षमा माँगी और कहा—
"हमें भाई-बहन के बीच दूरी बनाने की गलती नहीं करनी चाहिए।"

इसके बाद भाई-बहन का प्रेम देखकर ससुराल और मायके के बीच मित्रता हो गई।

त्योहार का महत्व और वर्तमान समय जैसे इस भाई-बहन के प्रेम को अमर कर दिया गया, वैसे ही हर बहन यह प्रार्थना करती है—
"हे ईश्वर, हमारे भाई-बहन के प्रेम को भी बनाए रखना।"
यह कहकर वह चावल और आरवले छोड़ती है। भाई-बहन के अमर प्रेम को दर्शाने के लिए यह पर्व मनाया जाता है, लेकिन वर्तमान समय में इस पर फिल्मी संस्कृति का प्रभाव पड़ रहा है।

इस त्योहार का महत्व उजागर करने और इसके प्रचार-प्रसार का मेरा उद्देश्य यही है कि हमारे घरों की बहू-बेटियाँ अपनी पारंपरिक रीति-रिवाजों का पालन करें,

इसके प्रचार-प्रसार का मेरा उद्देश्य यही है कि- हर त्योहार के पीछे एक गहरा और सुखद संदेश छुपा होता है।

यदि भाई घर से दूर है, तब भी हमें घर में आरवले बनाकर पूजा करनी चाहिए और अपने भाई की लंबी उम्र की कामना करनी चाहिए।

भाइयों को भी अपनी बहनों का सम्मान करना चाहिए और समय-समय पर उन्हें ससुराल से बुलाकर उनका आदर-सम्मान करना चाहिए, ताकि हमारी भारतीय संस्कृति एवं हिंदू धर्म सुरक्षित रह सके और हमारे समाज की विशेषताएँ सभी के ज्ञान में आ सकें।

- श्रीमती उषा चतुर्वेदी जी, भोपाल (म. प्र.)

अगर आप अपने

‘शब्दों के मोती’

भारतीय परम्परा

की माला में पिरोना

चाहते है तो हमे सम्पर्क करें!

आपका लेख वेबसाइट

पर भी प्रकाशित किया जायेगा

paramparabhartiya@gmail.com

जिंदगी-होली के रंगों सी

होली के रंगों सी रंगीन हो चली है,
जिंदगी बहुत ही खूबसूरत हो चली है।
बचपन था मात- पिता के प्यार-दुलार का
लाल रंग से भरा,
फिर भाई बहनों के नटखट पन में
हरे रंग से सजा।

दोस्तों की दोस्ती का गुलाबी रंग चढ़ा
और अनूठे प्यार का रंग है सुनहरा।

ममता के श्वेत रंग में बच्चों का बचपन है
भरा, यह एहसास है बड़ा ही खुशनुमा।

बस अब जिंदगी की सांझ में
सांवरे सांवरिया का सावरा रंग चढ़ जाए,
तो आनन्द ही आनन्द हो जाए।

आप सभी को होली की शुभकामनाएं!!

- योगिता सदाणी जी, पुणे (महाराष्ट्र)

आज उठाती है सवाल!
होलिका अपने दहन पर,

कीजिए थोड़ा चिन्तन-मनन दहन पर।
कितनी बुराइयों को समेट
हर बार जल जाती,
न जाने फिर क्यों इतनी बुराइयाँ रह जाती।

मैं अग्नि देव की उपासक,
भाई की आज्ञा के आगे नतमस्तक।

अग्नि का वरदान था
जला न सकेगी अग्नि मुझे,
पर जला दिया पाप, अधर्म, अहंकार ने
प्रह्लाद को, मैं जलाने चली नादान
पर बचाने वाले थे उसको भगवान।

सच आज भी तपकर निखरता है,
और झूठ आज भी टूटकर बिखरता है।

देती जो मैं सच का साथ,
ईश्वर का रहता मुझ पर हाथ!!!

- **संगीता दरक जी, मनासा,**
जिला नीमच (मध्यप्रदेश)

फ़ूलों की जाजिम ॥

बसंत ने - फ़ूलों की जाजिम बिछाई ।

उन पर आकर - तितलियां - भौंरे पसरे ।
ख़ुशबू के फाहे - बयार में बिखरे ।

कोयल की - गूंज उठी मधुर शहनाई ।

खेतों ने - सरसों रंग पगड़ी बांधी ।
अलसी ने - चूम उन्हें सीमा लांघी ।

फरिया में - बौर टांक खड़ी अमराई ।

धूप ने खिलकर - अपनी रंगत बदली ।
नाच स्वागत में - फाग बजाए डफली ।

मस्ती में - आज झूम उठी फगुनाई ।

पलाश - अब अंगारे सुलगाए खड़े ।
जंगल खड़े - पहन अचकन फ़ूलों कड़े ।

बहारों को - कोई न दे मुंह दिखाई ।

- **अशोक आनन जी, मक्सी,**
जिला शाजापुर (म.प्र.)

होली है

खुशियों के हर रंग से खेलो
भाईचारे से गले मिल लो,
होली का है यही संदेश
मन मे न रहे किसी के क्लेश ।

एकता के रंग मे सब रंग जाएँ
गीत स्नेह के गाते जाएँ ,
ढोल-ढमाका, ठल्लम- ठेली
रंग की मस्ती, हँसी-ठिठौली ।

सजी गुलाल की डोली है।
होली है भाई, होली है ॥

डॉ. अखिलेश शर्मा जी, इंदौर (म.प्र.)

मजा आ गया अनन्या पार्टी में, सचमुच जिंदगी में खुशियां तो बस सहेलियों के साथ ही मिलती है, अब हम जल्द ही गोवा ट्रिप प्लान करते हैं तब तक तू रिल्स के लिए गाने सिलेक्ट कर के रख लें कहते हुए दोनों खिलखिलाने लगी।

और सुन आज के पार्टी के विडियो, रिल्स शेयर करना जल्दी, कहते हुए रिया निकल पड़ी उसी समय उसके फोन की घंटी बज उठी।

"हैलो, हैलो टीना तुम्हारे तो मजे हैं तुम तो बढ़िया बैंकाक घूमकर आयी हो इंस्टा पर देखी मैंने तुम्हारे फोटोज।"

हाँ रिया कंपनी का आखिरी टूर था पर अब तो मैं जॉब छोड़ रही हूँ।

पागल हो गई है तू इतना अच्छा जॉब छोड़ देगी ? हाँ ऐसा ही समझ पहले मैं रुपयों के पीछे भागती थी पर अब ऐसा लग रहा है "बच्चों की सही परवरिश करने के लिए उन्हें संसाधनों की नहीं माँ के समय की जरूरत है।"

काफी समय से देख रही हूँ यज्ञ बिना मोबाइल के ना तो कुछ खाता है ना ही दूध पीता है, आया के भरोसे उसे सुबह से छोड़ कर जाती हूँ, **"आया माँ की जगह तो ले नहीं सकती"** जैसे ही यज्ञ तंग करता है वह मोबाइल थमा देती है उसे और वह उसमें मग्न हो जाता है। डॉक्टर को बताने पर पता चला वह नॉर्मल बच्चों की तरह व्यवहार नहीं कर सकता वह अपनी ही कल्पनाओं में खोया रहता है जिससे उसका मानसिक और बौद्धिक विकास रुक सा गया है।

यह सुनते ही रिया को अपनी ग़लती का अहसास हुआ वह तो कोई जॉब भी नहीं कर रही थी उसने अपनी सोशल मीडिया हिस्ट्री चेक की उसने देखा वह स्वयं दीन में चार घंटे से ज्यादा समय व्यर्थ गंवा रही है और उसे मोबाइल में व्यस्त देखकर उसके बच्चे भी समय से पहले बड़े हो गए। आज बच्चों के परिक्षा के नतीजे खराब आने का कारण उसे समझ तो गया किंतु जो समय बित गया उसका दुबारा जीवन में आना मुमकिन नहीं था अब शेष पश्चाताप के हाथ में कुछ नहीं रहा बच्चों का बिखरा भविष्य देखकर उसकी ऑखें शर्म से नम हो गई।

बच्चे तो माटी के घड़े जैसे है उन्हें आकार
कैसे देना यह माता- पिता पर निर्भर है।
फोटो, रिल्स, विडियो के चक्कर में उन
पलों का मजा भी पूरी तरह नहीं ले पायी
और उन्हें बार बार देखकर कितना ही समय निरर्थक व्यर्थ करते हैं इसका अनुमान लगाना कठिन है। सोच के सागर में डूबी वह अपने बेटे को कितनी ही बार आवाज लगा चुकी थी पर उसकी गर्दन को बुरी तरह से मोबाइल ने जकड़ रखा था।

- राजश्री राठी जी, अकोला (महाराष्ट्र)

भारतीय परम्परा

की मासिक ई-पत्रिका के पुराने सभी अंकों को देखने के लिए किताब के आइकन पर स्पर्श करें !!

भारतीय परम्परा
की मासिक ई-पत्रिका
नियमित प्राप्त करने हेतु हमें
सम्पर्क करें!

- व्हाट्सप्प और टेलीग्राम पर से हर महीने के शुरू में नया अंक प्रेषित किया जाता है। यदि किसी कारणवश आपको नया अंक नहीं मिला हो तो कृपया हमें सूचित करें।

- भारतीय परम्परा ई-पत्रिका के लिए दिए गए नंबर **7303021123** को मोबाइल में सेव करें और व्हाट्सप्प एवं टेलीग्राम के ग्रुप से जुड़े।

- ई-पत्रिका में जहाँ कहीं भी सोशल मीडिया के आइकॉन बने हुए है उन्हें स्पर्श करने पर आप उस लिंक पर इंटरनेट के माध्यम से पहुँच सकते है।

- ई-पत्रिका में कुछ त्रुटियाँ हो तो हमें जरूर बताये और आपको पत्रिका पसंद आये तो अपने परिवारजनों और मित्रों के साथ शेयर करें।

- **भारतीय परंपराओं** को संजोये रखने एवं ई-पत्रिका को सुरुचिपूर्ण बनाने के लिए आपके सुझावों और विचारों से अवगत जरूर कराये।

इस महीने होली का त्यौहार है, और अगर होली में पान या पान से बनी कोई खास डिश शामिल हो जाए, तो उत्साह और मजा कई गुना बढ़ जाता है।

सामग्री - पान के पत्ते – 8-10 (4-5 मीठे, 4-5 मद्रासी), गुलकंद – 3 चम्मच, चीनी – 700 ग्राम, सौंफ – 150 ग्राम, लौंग – 4-5, इलायची – 10-12, अस्मनतारा (ठंडाई) – 2 छोटी डांडिया, पानी – 1 गिलास, बर्फ का चूरा (ऐच्छिक)

विधि -

1. पान के पत्ते, सौंफ और लौंग को अच्छी तरह पीस लें।
2. एक पैन में पानी गरम करें और उसमें चीनी मिलाकर एक तार की चाशनी तैयार करें। (अगर आपको गुलकंद ज्यादा पसंद है, तो चीनी की मात्रा कम कर सकते हैं।)
3. तैयार चाशनी में गुलकंद और पीसी हुई सामग्री मिलाएं और 5-7 मिनट तक पकाएं।
4. गैस बंद करें और मिश्रण में ठंडाई मिला दें।
5. इसे ढककर लगभग 3 घंटे के लिए रख दें। 3 घंटे बाद इसे छानकर फ्रिज में ठंडा होने के लिए रख दें।
6. परोसते समय स्वादानुसार ठंडा पानी या दूध और बर्फ के टुकड़े मिलाकर लंबे पतले गिलास में सर्व करें।

होली के रंगों के साथ इस स्वादिष्ट पान शरबत का आनंद लें!

विविधा कुकिंग क्लासेस, पूनम राठी जी, नागपुर

पहुंचने
से अधिक जरूरी है
ठीक से
यात्रा करना...!

मेहनत करने वाले
का रास्ता भले ही
लंबा हो लेकिन
उसकी मंजिल
तय होती है...!

ईमानदारी
बड़ा महंगा शौक है,
हर कोई नहीं पाल
सकता...!

गलत को गलत,
बोलने वाले इंसान,
गलत लोगों की
नज़रों में
गलत ही होते हैं...!

ज़िंदगी में समस्या देने
वाले की हस्ती कितनी
भी बड़ी क्यों न हो पर
भगवान की कृपा दृष्टि से
बड़ी नहीं हो सकती...!

किसी का दर्द
समझने के लिये,
इंसान के अंदर
इंसान का होना
जरूरी है...!

31. परशुरामजी का क्रोध कैसे शांत हुआ...?

- जब भगवान श्रीराम ने परशुराम जी द्वारा दिये गये विष्णु धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाई तो उन्हें भान हुआ कि भगवान श्रीराम साक्षात विष्णु का ही अवतार है और मुनिवर उसी क्षण क्षमा मांगते हुए लौट गये।

32. क्रोध शांत होने से पहले परशुराम जी का किसके साथ विवाद हुआ...?

- स्वयंवर समारोह के दौरान परशुराम जी का लक्ष्मण के साथ विवाद हुआ। धनुष भंग को एक सामान्य घटना बताने पर परशुराम जी लक्ष्मण पर क्रोधित हो गये और दोनों के बीच विवाद होने लगा जो भगवान श्रीराम के हस्तक्षेप से शांत हुआ। जबकि वाल्मीकीय रामायण के अनुसार विवाह पश्चात अयोध्या लौटते समय परशुराम जी व दशरथ का संवाद हुआ।

33. भगवान श्रीराम के साथ-साथ और किन-किन भाइयों का विवाह हुआ...?

- लक्ष्मण, भरत व शत्रुघ्न का।

34. लक्ष्मण की पत्नी का क्या नाम था...?

- लक्ष्मण की पत्नी का नाम उर्मिला था जो महाराज जनक व महारानी सुनयना की दूसरी बेटी व सीता की बहन थी।

35. भरत व शत्रुघ्न की पत्नियों के क्या नाम थे...?

- भरत की पत्नी का नाम मांडवी व शत्रुघ्न की पत्नी का नाम श्रुतकीर्ति था। उर्मिला व श्रुतकीर्ति महाराज जनक के छोटे भाई कुशध्वज व चंद्रभाग की पुत्रियां थी। कुशध्वज, साकांश्या नगरी के राजा थे।

(दशरथ कुमारों के विवाह प्रसंग के साथ ही रामचरित मानस के पहले सोपान, बालकांड का समापन हुआ। अगला कांड अयोध्या कांड है)

अयोध्या काण्ड

36. अयोध्या काण्ड की शुरुआत किस मांगलिक प्रसंग से होती है..?

- कि कुलगुरु वशिष्ठ मुनि की अनुमति से महाराज दशरथ ने राजकुमार श्रीराम का राज्याभिषेक करने का निश्चय किया है।

37. राजकुमार श्रीराम का राज्याभिषेक क्यों नहीं हो पाया...?

- महारानी कैकेयी के द्वारा राजा दशरथ से मांगे गये दो वर के कारण।

38. महारानी कैकेयी के दो वर क्या थे...?

- पहला वर कि- भरत का राजतिलक किया जाये और दूसरा वर कि- राम, तपस्वियों की भांति चौदह वर्षों तक वनवास में निवास करें।

39. राजा दशरथ ने कैकेयी को दो वर कब और क्यों दिये...?

- एक बार देवासुर संग्राम में देवताओं की ओर से युद्ध करते हुए महाराज दशरथ घायल हो गये तो कैकेयी, जो उस समय सारथी के रूप में महाराज के साथ थी, ने कुशलतापूर्वक रथ का संचालन करते हुवे महाराज को युद्ध क्षेत्र से दूर ले गयी और औषधि से उपचार कर महाराज के प्राण बचाये। प्रसन्न होकर महाराज दशरथ ने दो वर मांगने को कहा। महारानी कैकेयी ने भविष्य में, उचित समय आने पर वर मांगने की बात कही।

40. महारानी कैकेयी को महाराज दशरथ से दो वर मांगने के लिए किसने उकसाया...?

- उनकी दासी, मंथरा ने।

41. मंथरा कौन थी...?

- मंथरा, महारानी कैकेयी की दासी थी। जो कैकेय देश से उनके साथ आयी थी। कूबड़ होने के कारण उसे कुब्जा भी कहा गया है।

42. जब कैकेयी ने यह ताना दिया कि मेरे द्वारा मांगे गये वर को आप अपने वचनानुसार दे नहीं पाओगे तो महाराज ने क्या कहा...?

- इस बाबत तुलसीदास जी रामचरितमानस में लिखते है कि-

"रघुकुल रीति सदा चलि आई, प्रान जाहुँ बरु बचनु न जाई।"

अर्थात रघुकुल में सदा से यह रीत चली आयी है कि प्राण भले ही चले जाये, पर वचन नहीं जाता।

43. भगवान श्रीराम के साथ वन में और कौन-कौन गये...?

- पत्नी सीता व भाई लक्ष्मण।

44. देहावसान के समय कितने पुत्र महाराज दशरथ के पास थे...?

- महाराज दशरथ के चार पुत्र थे लेकिन अन्तिम समय में उनके पास एक भी पुत्र नहीं था। दो पुत्र- राम व लक्ष्मण, वन में चले गये थे और शेष दो पुत्र, भरत व शत्रुघ्न ननिहाल, कैकेय देश गये हुए थे।

45. ऐसा क्यों हुआ...?

- मुनिकुमार, श्रवण के पिता के श्राप के कारण।

(क्रमश:.....अगले माह)

- माणक चंद सुथार जी, बीकानेर (राज.)

शब्द ही ब्रह्म है क्योंकि शब्दों से ही इस त्रिगुणात्मक संसार का सृजन संभव है!

बृहदारण्यकोपनिषद् में कहा गया है - **अहम ब्रह्मास्मि अर्थात् मैं ही ईश्वर हूँ।**

शंकाराचार्य का अद्वैत दर्शन भी कहता है कि ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः अर्थात् ब्रह्म सत्य है जगत असत्य तथा जीव ब्रह्म से भिन्न नहीं है। सूफ़ी मत में भी यही कहा गया है, **"अनलहक़"** अर्थात् मैं ही सत्य अथवा ईश्वर हूँ। सूफ़ी मत का आधारभूत दर्शन **"इब्नुल अरबी"** का वहदतुल वुजूद अथवा तौहीद (एकेश्वरवाद) है। यह अद्वैत दर्शन का ही सूफ़ी संस्करण है। मंसूर हल्लाज का कथन अनलहक़, जिसके लिए उन्हें सूली पर चढ़ना पड़ा, भी **अहम ब्रह्मास्मि का अरबी पर्याय है।** कहीं मनुष्य को ईश्वर का अंश माना गया है तो कहीं उसे विस्तृत ब्रह्माण्ड का लघु रूप माना गया है।

कहा गया है कि संपूर्ण सृष्टि की रचना ईश्वर की इच्छा मात्र से हुई है। वह अकेला था। उसने सोचा मैं अनेक हो जाऊँ और उसके ये सोचते ही सृष्टि का निर्माण हो गया। इन **विभिन्न विचारों के अनुसार यदि ईश्वर सृष्टि का रचयिता है तो उसका अंश होने के नाते मनुष्य भी सृष्टि का रचयिता ही हुआ।** मनुष्य भी ईश्वर का अंश अथवा ब्रह्माण्ड का लघु रूप होने के कारण ऐसी ही क्षमता से परिपूर्ण है इसमें संदेह नहीं। उसमें भी वो शक्ति अवश्य ही विद्यमान है। कम से कम वो रचना अथवा विकास का माध्यम तो बनता ही है।

मनुष्य में जो सबसे महत्त्वपूर्ण तत्त्व या शक्ति है वो है उसकी विचारशक्ति। अपनी विचारशक्ति को मनुष्य शब्दों के माध्यम से ही प्रकट करता है। हर शब्द का एक निश्चित अर्थ होता है। वह अर्थ किसी आकार को प्रकट करता है। वह आकार ही रचना के मूल में होता है। अतः शब्द ही रचयिता है। शब्द भौतिक जगत में आकार है तो मानसिक जगत में भाव भी है। मन में जैसा भाव होता है वही शब्दों के माध्यम से प्रकट किया जा सकता है, अतः भाव ही होता है, जो भौतिक जगत की वास्तविकता में परिवर्तित हो जाता है। इस प्रकार से शब्द ही रचयिता हुआ।

सृष्टि की रचना ईश्वर का कार्य है, अतः जब

शब्द रचना करने में समर्थ है, तो शब्द भी ब्रह्म ही हुआ। **"शब्दब्रह्म"** ।

संसार की रचना अथवा विस्तार के लिए कर्म अनिवार्य है और मनुष्य कर्म अपने विचारों के अनुरूप ही करता है। विचार पहले मन में भाव के रूप में उत्पन्न होते हैं और बाद में शब्दों का रूप ले लेते हैं। इसके बाद ही कर्म का प्रारंभ होता है, जिससे सृष्टि का निर्माण व विस्तार होता है।

वास्तव में यह संपूर्ण सृष्टि इस सृष्टि के वासियों की सामूहिक सोच का ही परिणाम है। **शब्द को ब्रह्म कहने का तात्पर्य यही है कि हर सृजन के मूल में शब्द ही होता है।**

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार **सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा हैं, पालक विष्णु हैं तथा संहारक शिव हैं।** शब्द एक ऐसी सत्ता है जो तीनों का कार्य करने में सक्षम है। शब्द में असीम शक्ति है। शब्द भी अनेक प्रकार के हैं। शब्दों के भेद के कारण ही ये संपूर्ण संसार अपना हो सकता है या पराया हो जाता है।

जीवन सुखमय हो सकता है या दुखमय हो सकता है। अच्छे शब्द अच्छा प्रभाव डालते हैं तो बुरे शब्द बुरा प्रभाव डालते हैं। सात्विक भावों अथवा शब्दों से सौहार्द में वृद्धि होती है तो तामसिक भावों अथवा शब्दों से ही वैमनस्य उत्पन्न होता है। इस त्रिगुणात्मक संसार की संपूर्ण संरचना के मूल में केवल सकारात्मक अथवा नकारात्मक भाव अथवा शब्द ही हैं। शब्द ही ब्रह्म अथवा सर्जक है, तो शब्दों के सही प्रयोग द्वारा संपूर्ण सृष्टि में संतुलन बनाया जा सकता है।

शब्दों के सही चयन के द्वारा आत्मघाती अथवा विनाशकारी सृजन को रोका जा सकता है। जो इतनी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर सकता है वह सचमुच ब्रह्म ही है। शब्द ब्रह्म ही नहीं उससे भी कहीं अधिक है। अपेक्षित है तो उसकी शक्तियों का सदुपयोग। जिसे भी शब्दब्रह्म का ज्ञान हो गया वही सृजन की कला में समृद्ध व निष्णात हो गया। वह स्वयं ब्रह्म ही बन गया।

- सीताराम गुप्ता जी, दिल्ली

जिनके घर शीशे के
होते हैं वो कहीं भी
खड़े होकर कंघी कर
सकते हैं..!

कल गन्ने के ठेले पर रस
पीते टाइम हार्ट अटैक आते-
आते बचा जब एक महिला
इम्प्रेशन झाड़ते हुए बोली.....
ब्रो ! प्लीज गिव मी
कालो लूण।

पूछना यह था कि....
अगर गाजर का 'हलवा'
जल जाए तो उसे
'जलवा' कह सकते हैं
क्या?

मोजा हमेशा धोकर पहनना
चाहिए नहीं तो ऐसा हो की
कामयाबी आपके कदम
चूमने आये और
वही बेहोश हो जाये..!

सौ बातों की एक बात,
अगर नोटों पर
EXPIRY DATE
आ जाये तो, काले धन
का किस्सा ही
खत्म हो जायेगा !

पहले लोग दरवाजा
खट-खाटाकर भाग जाते थे..
अब व्हाट्सप्प पर मैसेज करके
delete to everyone
कर देते है...
शरारत वही.. सोच नई!..!

दो तरह की दुनिया होती है, एक बाहरी दुनिया और एक आंतरिक दुनिया। परिस्थितियाँ, लोग, शारीरिक स्वास्थ्य इत्यादि बाहरी दुनिया है, विचार, भावनाएँ आदि आंतरिक दुनिया है।

एक "भाव" है, तो दूसरी "भावना" है, बाहर की दुनिया तो हम सब देखते हैं, लेकिन हमें देखना है कि हमारी आंतरिक दुनिया कैसी है? हमारी आंतरिक दुनिया के बारे में कोई और नहीं जान सकता, उसे केवल हम ही जान सकते हैं। आंतरिक दुनिया में हमने कुछ संकल्प, यादें और बहुत सी बातें पकड़ कर रख रखी हैं, कुछ अच्छी बातें और कुछ कड़वी बातें। मन की सभी बातें पुरानी हैं, यहाँ तक कि पिछला एक मिनट भी पुराना हो चुका है और हमने सारी पुरानी बातों को अपनी आंतरिक दुनिया में भर रखा है।

लेकिन, क्या कभी हम सोचते हैं कि इन पुरानी बातों की गुणवत्ता कैसी है? और उन पुरानी बातों को पकड़कर हम उदास होते रहते हैं। बाहर की दुनिया के बारे में हम सब जानते हैं, लेकिन आंतरिक दुनिया के बारे में हमें कम पता होता है। क्योंकि, आंतरिक दुनिया को हम रोज़ चेक नहीं करते, इसीलिए हम मेडिटेशन सीखते हैं और मेडिटेशन से हमारा ध्यान आंतरिक दुनिया की तरफ जाता है।

"ध्यान" में हम स्वयं से पूछते हैं कि हमारे विचारों और भावनाओं से हमारी परिस्थितियां एवं भाग्य बनता है अथवा परिस्थितियाँ एवं भाग्य से हमारे विचार बनते हैं।

मेडिटेशन से हमारा यह समीकरण तय होता है कि बाहर की दुनिया से आंतरिक दुनिया बनती है या आंतरिक दुनिया से बाहरी दुनिया बनती है। इन दोनों समीकरणों में से हमारे नियंत्रण में क्या है?

"ध्यान" हमें उस अवस्था तक पहुँचाता है, जहाँ पर बाहरी दुनिया में कुछ भी होता रहे हमारी आंतरिक दुनिया में कोई परिवर्तन नहीं होता। जब हमारा नियंत्रण हमारी आंतरिक दुनिया पर हो जाता है, तब हम वही देखते हैं जो हम देखना चाहते हैं।

और, तब हम केवल अपने मन की शांति और सुकून पर ही ध्यान केंद्रित करते हैं और यह सब अभ्यास से ही संभव हो पाता है।

हे परमेश्वर..!

अब से हम प्रतिदिन अपने मन की भाषा को बदलने का प्रयास करेंगे, अपने मन की भाषा को कहेंगे कि हमारा अपने आंतरिक मन पर पूरा नियंत्रण है। यानी, अब से हम अपना नज़रिया बदलेंगे और अपनी आंतरिक दुनिया से अपनी बाहरी दुनिया बनाने का प्रयास करेंगे।

धन्यवाद!

- मधु अजमेरा जी, ग्वालियर (म. प्र.)

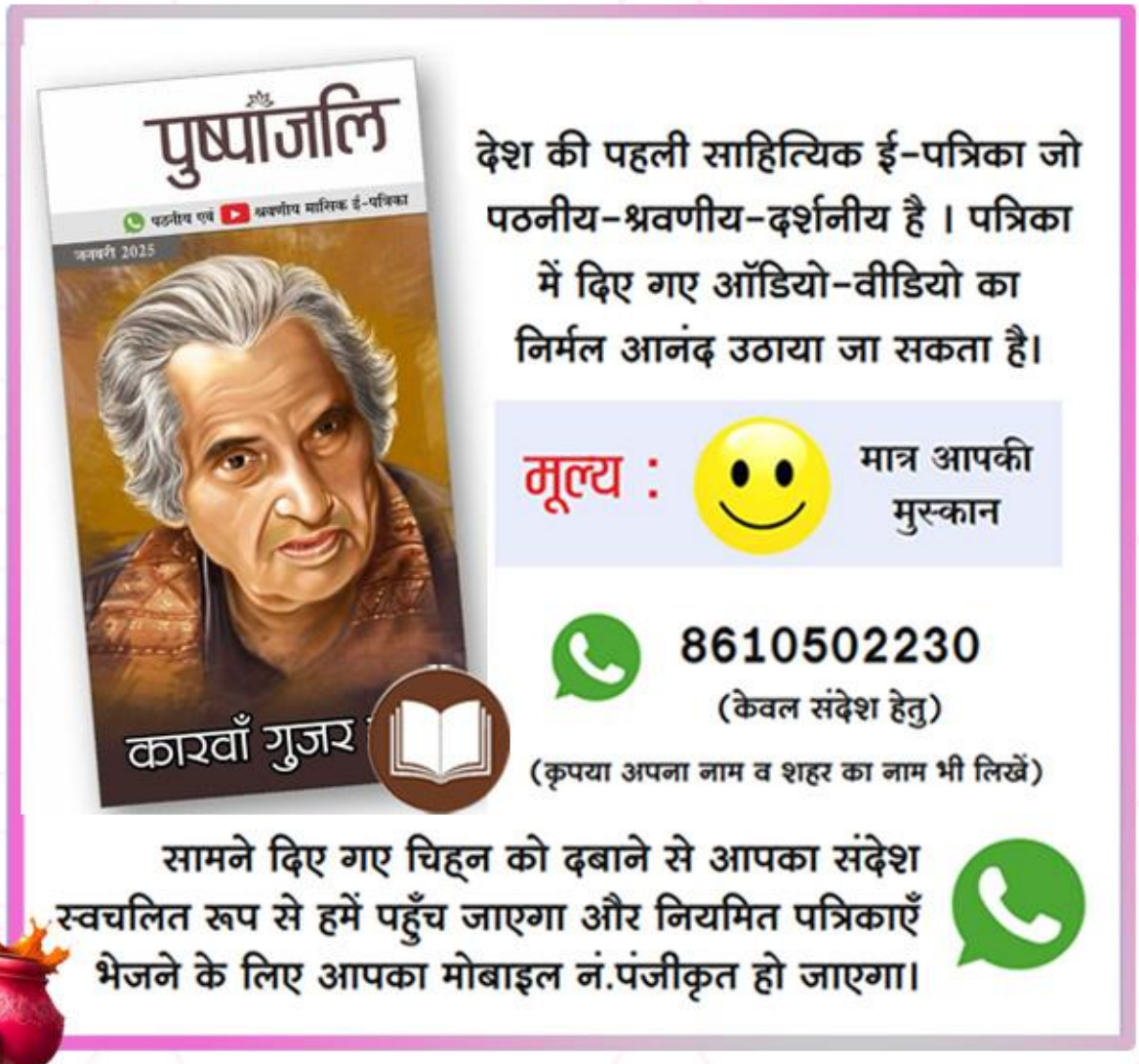

शीतला सप्तमी हिंदू धर्म में एक महत्वपूर्ण त्योहार है, जो माता शीतला को समर्पित होता है। यह पर्व होली के बाद चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की सप्तमी तिथि को मनाया जाता है। कुछ स्थानों पर इसे अष्टमी को भी मनाने की परंपरा है, जिसे **"शीतला अष्टमी"** कहा जाता है। इस दिन माता शीतला की पूजा करके स्वास्थ्य, शांति और समृद्धि की कामना की जाती है।

माता शीतला को रोगों से मुक्ति दिलाने वाली देवी माना जाता है। विशेष रूप से, **उन्हें चेचक, फोड़े-फुंसी और संक्रामक बीमारियों से बचाव करने वाली देवी के रूप में पूजा जाता है।** पुराणों में माता शीतला को माता पार्वती का रूप माना गया है। ऐसा विश्वास है कि उनकी आराधना करने से परिवार के सभी सदस्यों का स्वास्थ्य अच्छा रहता है और महामारी से बचाव होता है।

इस दिन विशेष रूप से बासी भोजन खाने की परंपरा होती है, **जिसे 'बासौड़ा' कहा जाता है। जिसमे मुख्यतः चावल और दही का मीठा ओलिया बनाया जाता है, आटे/मक्की की राब, मीठे पकोड़े, पूड़ी-सब्जी आदि बनाये जाते है।**

पूजा विधि -

- प्रातःकाल जल्दी उठकर स्नान करें और स्वच्छ वस्त्र धारण करें। पूजा का संकल्प लें।
- घर या मंदिर में शीतला माता की मूर्ति या चित्र की पूजा करें।
- माता शीतला को हल्दी, रोली, चावल और नीम के पत्ते अर्पित किए जाते हैं। इस दिन बासी भोजन (बासौड़ा) का भोग लगाया जाता है। मान्यता है कि इस दिन चूल्हा जलाना वर्जित होता है।
- अंत में शीतला सप्तमी की कथा का पाठ किया जाता है।

शीतला सप्तमी का त्योहार स्वच्छता, स्वास्थ्य और आध्यात्मिक आस्था से जुड़ा हुआ है। यह हमें यह संदेश देता है कि स्वच्छता और सही खानपान के माध्यम से रोगों से बचाव संभव है। माता शीतला की आराधना करने से घर-परिवार में सुख-समृद्धि बनी रहती है और बीमारियों से रक्षा होती है।

पूरा पढ़ -

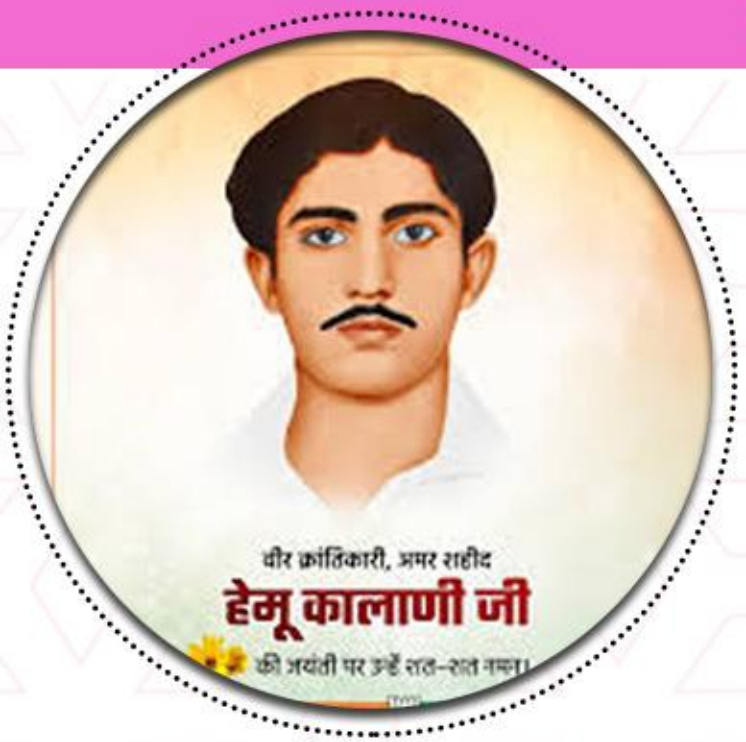

देश को अँग्रेजों से मुक्ति दिलाने के लिए जिन वीर सपूतों ने अपना बलिदान दिया, उनमें अमर बलिदानी हेमू कालाणी का नाम चिरस्मरणीय है। **मात्र 19 वर्ष की आयु में वे बलिदान हो गए थे।**

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महान क्रांतिकारी **हेमू कालाणी (हेमनदास कालाणी) का जन्म 23 मार्च, 1923 को बॉम्बे प्रेसीडेंसी के सिंध डिवीजन सुक्कुर (अब पाकिस्तान में) में एक सिंधी परिवार में हुआ था। वे पेसुमल कालाणी और जेठीबाई के पुत्र थे।**

वे स्कूल जाने के साथ ही क्रांतिकारी गतिविधियों में सक्रिय हो गए थे। सात वर्ष की आयु में ही वह बालक तिरंगा लेकर अँग्रेजों की बस्ती में चले जाता था और अपने मित्रों के साथ निडर होकर सभाएँ करता था। वह बालक पढ़ाई - लिखाई में अच्छा होने के साथ अच्छा तैराक और धावक भी था, इसलिए सभी का प्रिय था।

युवा के रूप में उन्होंने अपने मित्रों के साथ विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के लिए अभियान चलाया और लोगों को स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग करने के लिए प्रेरित किया। वे क्रांतिकारी गतिविधियों की ओर उन्मुख हुए और भारतीय उपमहाद्वीप से अँग्रेजों को खदेड़ने के उद्देश्य से विरोध प्रदर्शनों में भाग लेना आरम्भ कर दिया।

हेमू कालाणी 1942 ई. में शुरू हुए महात्मा गांधी के 'भारत छोड़ो 'आंदोलन में सम्मिलित हो गए। 8 अगस्त को 1942 को हेमू कालाणी ने सिंधवासियों में अपार जोश और स्वाभिमान भर दिया। उनका आंदोलन इतना तीव्र हो गया कि ब्रिटिश अधिकारियों को उनके पीछे यूरोपीय बटालियनों से बनी टुकड़ियाँ भेजनी पड़ीं। हेमू को जैसे ही इसका पता चला कि 23 अक्टूबर, 1942 की रात अँग्रेज सैनिकों, हथियारों तथा बारूद से भरी ट्रेन सिंध के रोहिणी स्टेशन से गुजरती हुई बलूचिस्तान के क्वेटा नगर पहुँचेगी, 19 वर्षीय युवा हेमू कालाणी ने ट्रैक से फिशप्लेट हटाकर इसे पटरी से उतारने का निश्चय किया। उनके साथ दो सहयोगी नंद और किशन भी थे। ट्रेन गुजरने के पहले ही तीनों नवयुवक सुनसान स्थल पर पहुँचे।

तोड़ - फोड़ करने के पहले ही अँग्रेज सिपाहियों ने उन्हें देख लिया। सिपाहियों ने उन्हें पकड़ लिया, जबकि दोनों साथी भाग गए। अँग्रेजों ने उनसे दोनों साथियों के नाम पूछा। **वे बोलते रहे 'मेरे दो साथी थे- रिंच और हथौड़ा'।**

सिपाहियों ने उन्हें कैद कर लिया और उन्हें प्रताड़ित किया, जिससे उनके सह-षडयंत्रकारियों के नाम उगलवा सकें, किन्तु हेमू ने कुछ भी जानकारी देने से इन्कार कर दिया। उन पर देशद्रोह का मुकदमा चला। 19 वर्ष कुछ माह होने के कारण हेमू कालाणी को आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई।

हैदराबाद (सिंध) स्थित सेना मुख्यालय के प्रमुख अधिकारी कर्नल रिचर्डसन ने आजीवन कैद की सजा को फांसी में बदल दिया। सिंध के लोगों ने दया की गुहार लगायी लेकिन दया की शर्त यह थी कि उन्हें सह-षडयंत्रकारियों के नाम एवं पहचान बतायी जाए। हेमू ने ऐसा करने के लिए फिर मना कर दिया।

अतः 21 जनवरी, 1943 सुबह 7.55 बजे हेमू कालाणी को फांसी पर लटकाया गया।

ऐसा कहा जाता है कि हेमू कालाणी को मृत्युदंड सुनाए जाने से इतनी प्रसन्नता हुई कि उनकी सदैव की भाँति दिनचर्या रही। सजा सुनाए जाने और फांसी दिए जाने के बीच समय में उनका वजन और बढ़ गया। फांसी दिए जाने वाले दिन को भी वे प्रसन्नचित थे। वे हाथ में भगवद्गीता लेकर फांसी के तख्ते की ओर बढ़े, पूरे रास्ते मुस्कुराते रहे और गुनगुनाते रहे। **'भारतमाता की जय' कहते हुए, उन्होंने अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया।**

देश को स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद वीर बलिदानी हेमू की मूर्तियाँ महाराष्ट्र, भोपाल, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, गुजरात आदि राज्यों के कई स्थानों पर स्थापित की गईं, **किंतु जन्मस्थान पाकिस्तान में कहीं कोई स्मारक न होना दुःखद है।** भारत माता के इस सपूत का बलिदान कभी भुलाया नहीं जा सकता।

- गौरीशंकर वैश्य जी, 'विनम्र', आदिलनगर, विकासनगर (लखनऊ)

LOOKING FOR CREATIVE TALENTS?

"We Love Being Creative
You Love Results
So We Focus On Both"

WHY YOU NEED US?
WE DESIGN YOUR DREAM.....

Unleash creativity beyond limits with our innovative solution at MX Creativity. Where ideas take flight, and visions come to life, we redefine possibilities in the world of design and innovation.

WEB DESIGN & DEVELOPMENT

Elevate your online presence with our expert Web Design and Development services – where innovation meets seamless functionality for a captivating digital experience.

APPS DESIGN & DEVELOPMENT

Transform ideas into interactive reality with our cutting-edge mobile app development. Amplify your reach and engagement through strategic marketing that propels your app to success in the digital landscape.

PRINT DESIGN & BRAND IDENTITY

Bring your brand to life on paper with our dynamic print media solutions. Elevate your identity through impactful branding that leaves a lasting impression in the tangible world.

चैत्र नवरात्रि

नवरात्रि शब्द का उदगम संस्कृत शब्द से हुआ है, जिसका अर्थ होता है **'नौ रातें'**, इन नौ रातों और दस दिनों के दौरान, शक्ति/देवी के नौ रूपों की आराधना की जाती है। चैत्र नवरात्रि के पहले दिन माँ दुर्गा का जन्म हुआ था और माता के कहने पर ही ब्रह्मा जी ने सृष्टि का निर्माण किया था।

युगादी का त्योहार क्यों मनाते हैं!

उगादी का पर्व उन लोगों के लिए नए साल के आगमन का प्रतीक है जो दक्षिण भारत के चंद्र कैलेंडर का अनुसरण करते हैं। उगादी के दिन सृष्टि की रचना करने वाले ब्रह्मा जी की पूजा की जाती है। यह पर्व प्रकृति के बहुत करीब लेकर आता है जो किसानों के लिए नयी फसल का आगमन होता है।

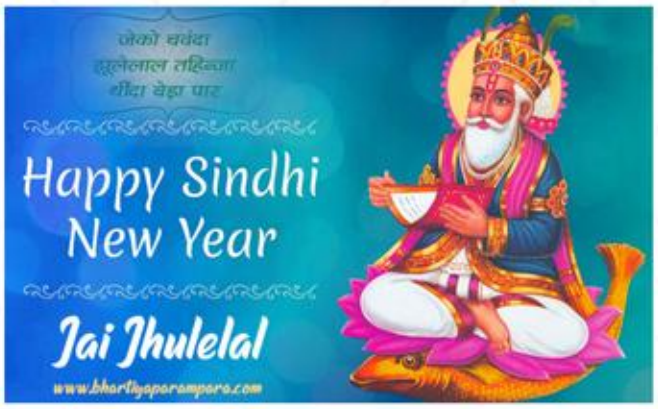

चेटीचंड - झूलेलाल जयंती

चैत्र शुक्ल द्वितीया से सिंधी नववर्ष प्रारम्भ होता है। जिसे चेटीचंड के नाम से जाना जाता है। चैत्र मास को सिंधी में चेट कहा जाता है और चांद को चण्डु, इसलिए चेटीचंड का अर्थ चैत्र का चाँद होता है। चेटीचंड का यह त्योहार चेती चाँद और झूलेलाल जयंती के नाम से भी जाना जाता है।

गुढी पाडवा पर्व

महाराष्ट्रीयन त्योहार **'गुढीपाडवा'** गुढी याने लकड़ी का बांबू और प्रतिपदा तिथि याने पाडवा। महाराष्ट्र के राजा शालीवाहन ने चैत्र शुक्ल प्रतिपदा इस दिन से काल गनना शुरु की थी, यह पर्व गुढीपाड़वा के नाम से मनाया जाता है।

गणगौर राजस्थान एवं सीमावर्ती राज्यों का एक मुख्य त्योहार है जो चैत्र माह की शुक्ल पक्ष की तृतीया को गणगौर का व्रत किया जाता है। इस दिन **कुंवारी कन्याएं एवं विवाहित महिलाएं ईसर जी (भगवान शिव) और गौरी जी (माँ पार्वती) की पूजा करती हैं।** यह व्रत महिलाएं अपने पति की लम्बी आयु के लिए और कुंवारी कन्याएं मनचाहे पति की प्राप्ति के लिए रखती है। गणगौर की पूजा 16 दिन तक होती है जो होली पर्व के दूसरे दिन से शुरू होकर गणगौर के दिन पूरी होती है। इसमें शुरू के 8 दिनों तक होली और गोबर की पिंडियों से और बाद के 8 दिनों में ईसर-गौर से पूजा की जाती है।

जिसके मुख्य भाग आप नीचे दिए आइकन पर से पूरा पढ़ सकते है –

- **गणगौर का सिंजारा**
- **गणगौर पूजा की 16 दिन की विधि**
- **गणगौर के दिन ईसर गौरी की पूजा विधि**
- **गणगौर पूजा का गीत**
- **पाटा धोने का गीत**
- **गणगौर की कथा**

राजस्थान को राजा-महाराजाओं की भूमि के तौर पर जाना जाता है। **राजस्थान को पहले "राजपुताना" कहते थे।** हर साल **30 मार्च को राजस्थान का स्थापना दिवस मनाया जाता है।** राजस्थान, भारत का सबसे बड़ा राज्य, अपनी समृद्ध संस्कृति, ऐतिहासिक धरोहर, भव्य महल, किले, रेगिस्तान और लोक परंपराओं के लिए प्रसिद्ध है। यह राज्य वीरता, राजपूताना शान और अतुलनीय सौंदर्य का प्रतीक है।

राजस्थान की जनसंख्या आज करीब सवा आठ करोड़ के आसपास है। राजस्थान में कुल 53 जिले हैं। मालपुरा, सुजानगढ़, कुचामन सिटी नए जिले हैं।

राजस्थान में ऊंट को रेगिस्तान का जहाज कहते हैं। राजस्थान में मारवाडी नस्ल के घोड़े प्रसिद्ध हैं। राजस्थान में एक ही हिल स्टेशन है माउंट आबू।

राजस्थान में कालीबंगन नाम का स्थान दुनिया की सबसे पुरानी सिंधु घाटी सभ्यता का हिस्सा है।

राजस्थान के शहर किसी न किसी कलर कोड को अपनाए हुए हैं। जैसे - **जयपुर गुलाबी शहर है, जोधपुर नीला शहर है, उदयपुर सफेद और झालावाड बैंगनी रंग का शहर है।**

सारी दुनिया में प्रसिद्ध अजमेर शरीफ दरगाह राजस्थान के प्रसिद्ध धार्मिक स्थलों में से एक है। राजस्थान अपनी पारम्परिक हस्तशिल्प और हस्तकला के लिये खासतौर पर जाना जाता है। भारत की एकमात्र खारी नदी लूनी, राजस्थान में थार रेगिस्तान से होकर बहती है और गुजरात के कच्छ के रण में समाप्त होती है।

राजस्थान में चलने वाली सिग्नेचर पॅलेस ऑन व्हील्स ट्रेन दुनिया की सबसे शानदार ट्रेनों में से एक है।

जैसलमेर के किले में आज भी वहां के लोग पीढ़ियों से रह रहे है। राजस्थान के बीकानेर में हर साल जनवरी में दो दिन ऊंट महोत्सव का नजारा देखने लायक होता है। बीकानेर शहर से 30 कि.मी. दूर एक चूहा मंदिर है। इसे **"करणी माता"** मंदिर भी कहते हैं। यहां 25 हजार काले चूहों का माहौल भी चकित करने वाला है। देश और दुनिया के भाविक इस मंदिर में दर्शन के

लिये कभी न कभी जरूर आते हैं। **दाल-बाटी-चूरमा, गट्टे की सब्जी, केर-सांगरी, मिर्ची बड़ा, प्याज की कचौरी, घेवर आदि देश और विदेश में प्रचलित है।**

राजस्थान में कुल 53 जिले हैं और करीब 45000 गांव हैं। राजस्थान एक औद्योगिक राज्य है। यहां सीमेंट उद्योग, सूती वस्त्र उद्योग, चीनी उद्योग, नमक उद्योग और कांच उद्योग बड़े प्रमाण में देखने को मिलते हैं। यहां के मुख्य उद्योगों में कपड़ा, कालीन, ऊनी कंबल, वनस्पति ऑईल और रंग के अलावा तांबा, जस्ता और रेलवे रोलिंग स्टॉक का निर्माण भी होता है। राजस्थान में कुल 11 हजार कारखाने हैं। यह इण्डस्ट्री के मामले में भारत में 10 वें नंबर पर है।

राजस्थान में राजाओं के शासन काल में बने कई किले, महल और अनोखी इमारतें आज भी मौजूद हैं, जो राजस्थान के इतिहास को दर्शाते हैं। **राजस्थान में अलग-अलग कुल 19 भाषाएं हैं। लेकिन अधिकतर मारवाडी और हिन्दी भाषा ही चलती है।**

राजस्थान अपनी वीरगाथाओं, लोक संगीत, कठपुतली कला और शानदार किलों के लिए प्रसिद्ध है। यह राज्य न केवल ऐतिहासिक धरोहरों का केंद्र है बल्कि अपने रंगीन मेलों, महोत्सवों और अतिथि सत्कार के लिए भी जाना जाता है।
"पधारो म्हारे देश!"

भारतीय परम्परा™
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage
www.bhartiyaparampara.com